ज्ञानमाला



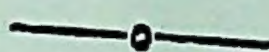


॥ श्रीः ॥

ज्ञानमाला ।



कलिमलग्रस्त मनुष्योंके निस्तारार्थ परब्रह्म परमेश्वर श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्दकी १२५ उत्तमोत्तम गोप्य शिक्षाएँ अर्जुनके प्रति ।



खेमराज श्रीकृष्णदास

अध्यक्ष–"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

❀ बम्बई. ❀

संस्करण : दिसंबर २०१५, सवंत् २०७२

मूल्य : ४५ रुपये मात्र

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

ज्ञानमाला प्रारम्भ ।



एक दिन राजा परीक्षित् राजगद्दी पर बैठे थे तिसी समय श्रीकृष्णद्वैपायन श्रीव्यासदेवजीके पुत्र श्रीशुकदेवजी आये, राजा देखतेही सिंहासनसे उठ खड़ा हुआ और ऋषिके चरणारविंदमें गिरके साष्टांग दण्डवत् कीनी। फिर बडे आदर और सत्कारसहित उनको सुन्दर स्थानमें लेजाके रत्नजडित सिंहासनपै बैठाय दोऊ चरणकमलोंको धोके चरणोदक लिया और विधिपूर्वक पूजन करके नानाप्रकारकी सामग्री भोजन करवायी, जब श्रीशुकदेवजी प्रसन्नतासहित बैठे तब राजाने दोऊ कर जोड़के विनती कीनी कि, हे कृपासिंधु दीनदयालु! आपकी अतिदया-

लुतासे सदैव वेद और पुराणके सुननेसे मेरे हृदयमें चांदना होता है और मनको आनन्द प्राप्त होता है परन्तु अब मेरे मनमें एक सन्देह उत्पन्न भया है कि, संसारमें ऊंचे और नीचे दोऊ कर्म हैं सो आप कृपा करके इन दोनों कर्मोंके भेद भिन्न २ मोसे कहो और मेरे मनका संदेह निवारण करो। राजाका यह प्रश्न सुनकर श्रीशुकदेवजी बहुत प्रसन्न भये और आज्ञा कीनी कि हे राजा! तेरे प्रश्नसे संसारी मनुष्योंको बड़ा लाभ है और जो यह संदेह तेरे मनमें उपजा है सोही अर्जुनके मनमें उत्पन्न भया था सो श्रीकृ-ष्णजीने उसके प्रश्नोंका जिस भांति उत्तर दिये सोही मैं तेरे आगे कहता हूँ तू मन देके सुन

श्रीशुकदेवजीका राजा परीक्षितसे ऊंच नीच कर्मका भेद वर्णन करना।

हे राजा! एक दिन प्रातःकाल श्रीकृष्णजी

अर्जुनके गृह पधारे, खबर पायी कि अर्जुन सोवे है यह बात सुनके श्रीकृष्णजी अचंभेमें रहे फिर अर्जुनने श्रीकृष्णजीको स्वप्नमें देखा और तुरत जाग उठा, सेवकोंने अर्जुनसों यह कही कि, हे स्वामी ! श्रीकृष्णजी पधारे हैं यह सुनकर अर्जुन दौड़कर श्रीकृष्णजीके चरणारविंदमें गिरा और दण्डवत् करिके स्थित हो दोऊ कर जोड़के विनती कीनी कि हे सच्चिदानन्द जगदीश ! मोते यह अपराध अनजाने ही बन पड़ा है सो आप कृपा करके क्षमा करो और मेरी रक्षा करो। यह सुनके श्रीकृष्णजीने अर्जुनसे कहा कि हे अर्जुन ! तू बड़ा बुद्धिमान् और ज्ञानी है या समय मैंने तुझे सोया स्वप्नावस्थामें देखके बहुत शोच कीनो है क्योंकि मनुष्यदेह कठिनतासे प्राप्त होती है सो या मनुष्य देहको पायके ऐसे समयमें सोना बुद्धिमान्को उचित नहीं है, ये

वचन श्रीकृष्णजीके सुनके अर्जुनने फिर विनती करके प्रश्न कियो कि हे दीनबंधु दीनानाथ! जो अपराध सेवकसों अनजाने बन आया है वाको कृपादृष्टिसे क्षमा करके अब आप कृपा करके आज्ञा करो कि कौन कौनसे अहित-कारी कर्मनका त्याग करना अवश्य है? तब श्रीकृष्णजीने उत्तर दियो कि हे मित्र! जो बातें वेदसे गुप्त हैं और देवताओंने जानी नहीं हैं सो तेरे आगे कहता हूँ मन लगायके सुन और इन शिक्षाओंको तू अथवा और कोई जो सुनेगा या पढ़ेगा या प्रेमपूर्वक इसकी एक प्रति अंगीकार करेगा या ब्राह्मणको दान करेगा सो पापके बन्धनसे छूटके मुक्ति पावेगा।

श्रीकृष्णजी महाराजका अर्जुन प्रति परम ज्ञानरूप शिक्षाओंका वर्णन करना।

१ शिक्षा—हे अर्जुन! प्रातःकाल जिस समय

श्रीसूर्यजी उदय हों उस समय मनुष्यको सोना उचित नहीं है क्योंकि एक प्रहर रात्रि बाकी रहे पर सूर्यजी और दैत्यनमें युद्ध होता है सो अस्सी हजार दैत्यनको मारके सूर्य उदय होते हैं और दैत्य जी उठते हैं इसलिये मनुष्यको चाहिये कि, दो चार घडीके सबेरे उठके परमदयालु परमेश्वरके ध्यानमें मन लगायके भजनानन्दमें मग्न रहे और जब अरुणोदय होय तब स्नान करके सूर्यनारायणको जल अर्पण करके दंडवत् करके और पितृदेवताको जल देवे तो वह जल ग्रहण करनेसों श्रीसूर्यदेवता और पितृदेवता बलवान् होयके प्रसन्नतासों आशीर्वाद देंगे। जो मनुष्य इस विधिको अंगीकार करेगा इस लोक और परलोकके सुखोंका भागी होवेगा।

२ शिक्षा-हे अर्जुन! चारपाईके बिछौनेमें एक अपनी स्त्रीके सिवा और किसी दूसरेके संग

सोना पापका मूल है, क्योंकि विवाहिता स्त्री तो अर्द्धांगिनी सब पाप और पुण्यकी साथिनी है परन्तु कोई और दूसरा अपने बिछौनेपे सोवे तो वह भी पाप और पुण्यमें साथी होय । यह सुनके अर्जुनने हाथ जोड़ प्रश्न किये कि हे कृपालु करुणानिधान ! जो कोई नतैती अपने घर आवे और उसके पास बिछौना नहीं होय तो कहा करे तब क्या उचित है ? श्रीकृष्णजीने कहा कि उस नतैतीको उचित है जो अपने अंगके समान अपना वस्त्र बिछौनेपै बिछाके उसपर सोवैं तो कुछ दोष नहीं होय ।

दोहा ।

अर्जुन ! विधवा त्रियनकी, करी पाक ना खाय ।
अर्द्धांगी वह पीयकी, पीय मरें शव भाय ॥

३ शिक्षा-हे अर्जुन ! विधवा स्त्रीके हाथसों रसोई पाना बड़ा दोष है, क्योंकि जिस स्त्रीका

पति मरजाताहै वह अधजले मुर्देके तुल्यहो जाती है इस कारण उसके हाथसे रसोई पाना महापाप है और ऐसे नीचकर्मते मुक्ति पाना भी कठिन है।

४ शिक्षा—हे अर्जुन । संध्यासमय जो कोई घरके आंगनमें झाड़ू देता है वह अवश्य दरिद्री होजाता है क्योंकि उस समय लक्ष्मीजीके गमन करनेका घर घरमें वास है जिसके हाथमें झाड़ू देखैं हैं तो लक्ष्मीजी वाको शाप देके फिर वाके घरमें गमन नहीं करै है ।

५ शिक्षा—हे अर्जुन जो मनुष्य ग्यारस अथवा कोई व्रत धारण करे और स्त्रीके पास जाय तो व्रतको फल नहीं पावे यह सुनके अर्जुनने दोऊ हाथ जोड़के प्रश्न कियो कि हे सच्चिदानंद जग-दीश ! व्रतके दिन जो स्त्री दोषकर्मते निश्चित होके स्नान करे और पुरुष वाके पास नहीं जाय तो महापातकी होय और जाय तो व्रत निष्फल होय

फिर क्या करना चाहिये ? श्रीकृष्णजीने कहा अर्द्ध रात्रि बीते (पर) जाय तो कछु दोष नहीं क्योंकि रात्रिके पीछे दोऊपहर अगले दिनकी गिनतीमें हैं।

६ शिक्षा–हेअर्जुन ! रात्रिके समय दीपककी बातीजलानेसे बाकी बची जो कोई वा मरी बातीको दूसरे दिन जलावे तो महापाप है याही पापसे वा मनुष्यकी स्त्री बहुत काल बांझ रहेगी। अर्जुनने जब श्रीकृष्ण त्रिलोकीनाथके मुखारविंदसे यह शिक्षा सुनी तब बहुत पश्चात्ताप कीनो और चकित भयो फिर दोऊ कर जोड़के विनती कीनी कि,हे अनाथके नाथ दयासिंधु वासुदेव ! आपने जो शिक्षा कीनी उनके सुननेसे दासके मनमें अति आनंद प्राप्त भयो है कृपाकरके कुछ और आज्ञा कीजिये।

७ शिक्षा–हे अर्जुन ! जो मनुष्य सूर्यनारायणके

सन्मुख होयके दंतधावन और कुल्ला करे अथवा अग्नि और जलमें कुल्ला करे सो महापातकी होय और अन्तकाल नरकमें जाय, जानना चाहिये कि देवतानमें ये तीनों देवता बड़े हैं जो मनुष्य प्रीतिकी रीतिसे इनका पूजन सदा करता रहेगा वाको यज्ञ करनेका फल प्राप्त होयगा। अर्जुनने प्रश्न कियो कि, हे घनश्याम चतुर्भुज-स्वरूप ! इन तीनों देवतानका पूजन किस विधि प्रतिदिन करना चाहिये सो कृपा करके आज्ञा करो। तब श्रीकृष्णजीने कहा-

सूर्य, अग्नि, जलदेवकी पूजनविधि ।

(सूर्यनारायणकी पूजनविधि) आदित्यवार को व्रत धारण करे और व्रत न राख सके तो वा दिन तो नोन नहीं खाय और प्रातःकाल स्नान करके श्रीसूर्यको पात्रते जल तर्पण करके दंडवत् करे। (अग्निदेवताकी पूजनविधि) प्रातः-

काल स्नान करके अपने इष्टदेवताको ध्यान और स्मरण करे फिर शर्करा, घृत, तिल, यवादि सामग्रीसे अग्निदेवका पूजन करे और जो इस भांति नहीं कर सके तो जब रसोई होजाय तब रसोईकी सब सामग्रीसे पूजन करे। (जलदेवताकी पूजनविधि) प्रातःकाल स्नान करके जलदेवतापे दूध चढ़ावे और चन्दन चावल पुष्प चढाइके मिठाई अर्पण करे ।

इति पूजन विधि ।

जो मनुष्य इस भांतिसे इन तीनों देवतानको पूजन प्रतिदिनकरे तोइनके आशीर्वादसों इसलोकमें धन संतान और परलोकमें वैकुण्ठधाम पावे ।

८ शिक्षा—हे अर्जुन! मनुष्यको चाहिये कि, जलते भये दीपकको बुझावे नहीं और जो कोई पुरुष या स्त्री दीपकसों दीपक जोडे तो पातकी होय ।

९ शिक्षा–हे अर्जुन ! जो व्रती मनुष्य चारपाईपै सोवे तो व्रत निष्फल होजाय क्योंकि, जिस देवताको व्रत धारण करे सोई देवता व्रतके दिन व्रती मनुष्यकी देहमें वास करता है इस लिये जो व्रती व्रतके दिन स्वच्छतासे रहे और चारपाईपै सोवे नहीं पृथ्वीपर सोवे स्त्रीसे अलग रहे एक बार फलाहार करे कछु ब्राह्मणको भोजन देइ तो देवता प्रसन्न होइके आशीर्वाद देवे और व्रत फलदायक होय ।

१० शिक्षा–हे अर्जुन ! व्रतके दिन किसीको अपनी जूठन देनी न चाहिये क्योंकि, जो कोई जूठन खायगा तो व्रतके फलमें भागी होगा यह बड़ा दोष है ।

११ शिक्षा–हे अर्जुन ! जो मनुष्य रसोईमध्यमें (अर्थात् कुछेक सामग्री तो बनगयी होय और कुछ सामग्री बननेको बाकी रही होय) जल्दी

रुके रसोई खाने लग जाय अथवा जबलों रसोईकी सर्व सामग्री तैयार नहीं हो चुके और अग्निदेवको प्रथम भोजन नहीं कराइ लेवे तब तक किसीको रसोईमेंसे अग्नि देदेवे अथवा रसोईमें थाली आदि कोई पात्र नहीं होय और रसोईकी सामग्रीको पृथ्वी पर धर देवे तो इन तीनों पापनके कारण "उनमेंसों एक २ न्यारा महापाप है" वह मनुष्य सदा दरिद्रीसा रहेगा इसलिये मनुष्यको अवश्य है कि, जब रसोईमें सब सामग्री तैयार होजाय तब स्वच्छतासों प्रथम चौरस आसनपै बैठिके अग्निमुखके द्वारा श्री पूर्णब्रह्म परमदयालु परमेश्वरको वो भोजन करावे फिर अन्नदेवको नमस्कार करे फिर एक अभ्यागतको रसोईकी सब सामग्री भोजन करावे और सामर्थ्य नहीं होय तौ थोड़ी थोड़ी सब सामग्री अभ्यागतके निमित्त

अर्पण कर आप रसोई पावे तो इस महापुण्यके प्रतापसों अग्निदेव और अन्नदेवका आशीर्वाद पायके वह मनुष्य सदा सुखी रहेगा।

१२—शिक्षा—हे अर्जुन! जो मनुष्य तांबेके पात्रको जूठनसों अशुद्ध करे अथवा शौचस्थानमें लेजाय सो अंतकाल नरकवासी होय, क्योंकि सब धातुओंमें तांबाही महापवित्र है और इसी लिये जो मनुष्य ताम्रके पात्रमें जल भरके स्नान करे तो गंगाजलके समान माहात्म्य है और पितृदेवतनको तांबेके पात्रमें भोजन और जल अर्पण करे तो महापुण्य है।

१३—शिक्षा—हे अर्जुन! जो मनुष्य ब्रह्महत्या और परनारीसों मैथुन करे सो हजारवर्ष पर्यन्त नरकमें वास करे, और कदाचित् वाकी बिंदुकी किसी स्त्रीके गर्भ रहे और पुत्र पैदा होय तो जो उसके पितृ अपने स्वकर्मके फल भोगनेके कारण

वैकुंठधाममें वास करते होयँ सो वैकुंठसे नरकमें जायके वास करैं, और तर्पण श्राद्धसे सदा विमुख रहैं यह पाप सब पापोंमें महापाप है ।

१४-शिक्षा-हे अर्जुन ! जो मनुष्य स्त्रीसे अंगसंग करके स्नान नहीं करे और अपवित्र रहे सो ऐसे पापसे अंतकाल नरकमें जाय, इसलिये कि, उस मनुष्यका पाँव पृथ्वीपर धरना ऐसा है जैसे पितृनपर धरा ।

१५ शिक्षा-हे अर्जुन ! अमावस्याको डाली और पत्तेका तोड़ना ब्रह्महत्याके समान है और वो दिन दंतधावन करना भी अयोग्य है ।

१६ शिक्षा-हे अर्जुन ! जो कोई परदेशी तथा अभ्यागत कुछ याचना करे तो अपनी शक्तिके अनुसार वाको देइ और विमुख न जानेदे तो महापुण्य है नहीं तो महापाप है ।

१७शिक्षा-हे अर्जुन ! जो मनुष्य अपने घरमें

टूटीखाट और फूटे बर्तन राखे सो दरिद्री होजाय।

१८ शिक्षा–हे अर्जुन मनुष्य नारायणका नाम लेके भोजन जल पाया करे अरु चलते फिरते उठते बैठते जो काम करे सो परमेश्वरका नाम लेके करे तो इस महासुकर्मके फलसों इस लोक और परलोकके सुखोंका अति आनंद पावे यह समझ महापुनीत मनवांछित फलदायक है और जो मनुष्य चलते फिरते डगर बाटमें बारंबार मनमें आवे सो ले खाय और परमेश्वरका नाम उच्चारण नहीं करे सो इस पापसे जगत्के बंधनसे कभी नहीं छूटे।

१९ शिक्षा–हे अर्जुन। किसी मनुष्यके साथ एक पात्रमें भोजन करना बड़ा दोष है न जाना जाय पूर्वके जन्ममें वह मनुष्य कौनसी देहमें था। भोजन संग करनेके कारण वाके पूर्वजन्मकी प्रकृति याके अंतःकरणमें प्राप्त होजाती है, इस लिये ऐसे नीचकर्मको अंगीकार करना न चाहिये

२० शिक्षा–हे अर्जुन ! भोजन करनेके समय अन्नदेवता मुखमें पधारै है इसलिये मौन धरिके मिथ्यावचन मुखसे निकसे तो अन्नदेवके शापते याही जन्ममें विपत्तिके बंधनमें बँधे इसलिये मनुष्यको आवश्यक है कि एक चित्त होके स्वच्छतासे या चौरस बैठके दाये बाये नदेखे और अन्नदेवकी बड़ाई मनमें करता भया भोजन करे, ऐसे मुकमेंसे सदा सुखी रहै।यह सुनके अर्जुनने प्रश्न कियो कि हे जगदीश जगद्गुरु।भोजन करते कुछ कहना किसीको अवश्य होय तो कैसे करना चाहिये ? श्रीकृष्णजीने आज्ञा कीनी कि, कुटुम्बीको बतलाना अवश्य होय तो मनमें अन्न देवतासों प्रार्थना करके सच्चिदानंद भगवान्का नाम लेके पांच ग्रास लेके और आचमन करके बोले परन्तु किसीकी बुराई न करै और खोटा वचन न बोले ।

२१ शिक्षा–हे अर्जुन! जो मनुष्य अपनी विवाहिता अर्द्धांगिनी परमहितकारिणी स्त्रीसे विपरीत ठानिके अपने मुखसों वाकी बुराई करे और खोटा वचन बोलके मनको दुःखरूपी अग्निमें दहे सो मूर्ख मनुष्य ढोरडंगरके समान है, या पापसों इस लोकमें सदा क्लेशके बन्धनमें रहे और अन्तकाल नरकमें जायके वास करे क्योंकि, जिस समय विवाहिता स्त्रीके गर्भसों पुत्र प्रकट होता है तिस समय उस मनुष्यके पितृदेव कदाचित् नीचकर्मके फल भोगवेको नरकके वासी होयँ तो पापमोचन पुत्रकी प्रसन्नतासे नीच कर्मनको भोगते मुक्ति पायके वैकुण्ठ धामको सिधारें और बारंबार आशीर्वाद दिया करें इसलिये मनुष्यको चाहिये कि, विवाहिता स्त्रीको प्यार प्रीतिकी रीतिसों ऐसी सुखी राखे कि, वह मन वचन कर्म करके संसारमें अपने पतिके समान सुंदर और हितकारी किसी

को न जाने क्योंकि विवाहिता स्त्री पाप और पुण्यमें संगी है याहीते वाके पापनसों पापनकी और पुण्यनसों पुण्यनकी बढ़वारी होती है कदाचित वासों कोई अपराध बन आवे तो पुरुषको चाहिये वापे दृष्टि न करै और सदा वाको प्यार अति प्रीतिकी रीतिसों शिक्षा देता रहै और वाके मनको प्रसन्न राखे और शीलवती स्त्रीको चाहिये कि अपने पतिको परमेश्वरके समान जानिके निशिदिन वाकी सेवामें तन मन अर्पण करे अरु पतिव्रताके धर्मका साधन राखे और पति कैसाही कठोर वचन और निर्दयी होय परन्तु, वाको ईश्वरके समान जानके जैसे संपत्तिमें तैसेही विपत्तिमें प्रसन्नतासहित पतिकी आज्ञामें मुहँ न मोड़े अरु सुखदुःखमें जिसविधि परमेश्वर राखे वामें राजी होयके अपने प्यारे पीवकी प्रसन्नताका उपाय करती रहै और अपनी श्रद्धाके

अनुमान सुन्दर वस्त्र और आभूषणसे अपने अंगको शोभित करके पुरुषके मनको मुदित राखे, जासे वाके पुरुषको मन परनारीपै चलायमान न होवे और अपने धर्मकर्ममें सावधान बना रहे ऐसी विधिसों जो दोनों स्त्री पुरुष आपसमें प्यार प्रीतिसों रहें तो इस लोकके सुखोंको अच्छी भाँति भोग करैं और अंतकाल वैकुण्ठधाममें परम आनन्दसों वास करें ।

२२ शिक्षा—हे अर्जुन ! दीपक या सूर्यकी ज्योतिसे खोटी छाया मनुष्यकी देहपै पड़े तो दूषित है ।

२३ शिक्षा—हे अर्जुन ! जो मनुष्य किसीको मूठसों अथवा और प्रकारसों मारनेको उपाय करे सो अन्तसमय बारह वर्ष नरकमें वास करे, यह महापाप है ।

२४शिक्षा–हे अर्जुन ! रूखी रोटी अर्थात विना सामग्रीका भोजन करना बड़ा दोष है । मानो प्रेतके संग भोजन किया, क्योंकि जिस रसोंईमें घृत विना सामग्री बने तहां प्रेत विघ्न करता है और उस घरमें दरिद्रताका वास होजाता है, इसलिये मनुष्यको अवश्य है कि, रसोंईमें श्रद्धा होय जितना घृत लाके घृत सानी रोटी भोजन करे क्योंकि घृतगन्धसों प्रेत बाधित नहीं कर सकता है ।

२५शिक्षा–हे अर्जुन ! जो कोई मनुष्य दीपकसों अग्नि बारिके रसोंई बनावे अथवा कुछ और काम करे तो वाको दीपक शाप देता है यह महादोष है क्योंकि वह अग्नि मुर्दाकी चिताके समान महा अशुद्ध है ।

२६शिक्षा–हे अर्जुन ! जो मनुष्य प्रातःकाल या संध्यासमय देहलीपै बैठे, वाके घरसों पुण्य दान घटे सम्पति घटे और ऋण बढ़े ।

२७ शिक्षा—हे अर्जुन! जो कोई प्रातःकाल घरमें झाडू देके कूड़ा इकट्ठा करकर पौरिके आगे डारे वह अहंकारी धनवान्‌की सम्पत्ति लक्ष्मी-जीके शापते थोडे ही कालमें नाशको प्राप्त होय।

२८ शिक्षा—हे अर्जुन! जो मनुष्य बाग तालाब या नदीके किनारेपै दिशा जाय, सो बहुत काल नरकमें बास करै।

२९ शिक्षा—हे अर्जुन! जो मनुष्य ग्यारसके दिन अन्नखाय और व्रत न राखै उसका जीना पशुके समान है, वह अंतकाल पाँच हत्यानको अपराधी होइके नरकमें वास करे, इसलिये मनुष्यको अवश्य है कि ग्यारसको व्रत धारण करके दिनभर श्रीदीनदयालुके ध्यानमें मग्न रहे और रात्रिको जागरण करे तो वाके पापनको नाश और पितृदेवतनको स्वर्गवास प्राप्त होय। यह कथा सुनके अर्जुनने प्रश्न किया कि, हे दयालु

भवभयहारी ! कदाचित् भूल चूकसे व्रतके दिन कोई अन्नको भोजन करै तो वह या पापसे कैसे मुक्ति पावे ? श्रीकृष्णजीने कह्यो कि, हे अर्जुन ! भोजन करनेमें व्रत जाना जाय तो फिर ग्रास न ले तुरंत भोजनको त्यागिके व्रत धारण करै तो वाके व्रतको उसे पूर्णफल प्राप्त होय और वाके पितृदेव सुखी होइँ और कदाचित् कोई मनुष्य निर्जल व्रत न रखसके तो गायके दूधके सिवाय और कुछ अहार नहीं कीजिये ऐसे व्रतको फल वाहीके समान है और इस बातपैभी ध्यान रखनो चाहिये कि, ग्यारसको चावलको खावनो कीट-केसमान है जितने चावल उदरमें जावे उतनी हत्या शिरपै आवैं कदाचित् व्रत न राख सके तो भी ग्यारसको चावलको खाइबो महादोष है क्योंकि, पापको बास ग्यारसको अन्नमें और आदित्यवारको लोनमें होताहै, इसलिये मांदगी

बीमारीके कारण मनुष्य व्रती नहीं होय तो भी ग्यारसको चावल और रविवारको नोनका भोजन भूलके भी न करै ।

जब अर्जुन यह गुप्त वार्ता श्रीकृष्णके मुखारविंदसे श्रवण कर कंपित होय महाशोचके समुद्रमें बूड़िगयो तब तो श्रीकृष्णजीने वाको शोच अवस्थामें शिथिल देख अतिदयालुतासों वाके मनको क्लेश मिटाके आज्ञा कीनी कि हे अर्जुन ! आजलों जो तोसों ऊंच नीच कर्म बन आये तिस कारण यह गुप्त भेद तोसों प्रगट कियो मन लगाय याको अंगीकार कर जो तेरे काम आवें, यह आज्ञा पायके अर्जुनने श्रीकृष्णके चरणारविंदमें शीश नायके प्रसन्नतासहित दोऊ कर जोड़िके स्तुति कीनी कि, हे मधुसूदन ब्रजभूषण नंदनंदन मनमोहन अधमउधारन ! जो जो श्रीमहाराजने संसारसागरसे पार उत-

रिबेको यह शिक्षा नौकारूप मुखारविंदसों आज्ञा कीनी ताकी महिमा गायबेको मेरो कहा उन्मान है कारण जहां शेष, दिनेश, वेदादिक पार न पा सके सो हे नाथ ! मेरी रक्षा करो अर्थात् और कुछ आज्ञा कीजिये। श्रीकृष्णजीने अर्जुनको परम अधिकारी जानके आज्ञा कीनी ।

३० शिक्षा—हे अर्जुन ! जो मनुष्य रजस्वला स्त्रीसों मैथुन करे सो या महादोषके कारण यहीं संसारमें रोगग्रस्त हो और अन्तकाल नरकमें जायके हजारन वर्ष वास करे कारण यह है कि रजस्वला स्त्री पहले दिन ब्रह्महत्यारी, दूसरे दिन चांडाली, तीसरे दिन धोबिनके समान होती है, इन तीन दिनमें वाके वस्त्र छूने और मुख देखनेसे मनुष्यको पातक लगता है कदाचित् रजस्वला स्त्रीके हाथनसों मनुष्य कोई वस्तु भोजन करे तो अपनी अवस्थामें

जेते पुण्य दान किये होयँ सो सब नाशको प्राप्त होजायँ इसलिये मनुष्यको अवश्य है कि जब चौथेदिन रजस्वला स्त्री स्नान करके शुद्ध होय तब वाके संग मैथुन कर्म करै और वा दिन मनुष्य स्त्रीसों मैथुन कर्म नहीं करै तो एक मनुष्य मारनेकी हत्या वाके शिर चढे। यह सुनके अर्जुनने विनती कीनी कि, हे जग-दीश अंतर्यामी! जो वा स्त्रीका पुरुष परदेश गया होय तौ या पापसों कैसे मुक्ति पावे ? श्रीकृष्णजीने कही जो पुरुष घरमें नहीं होय तो स्त्रीको अवश्य है कि स्नान करके सूर्य सम्मुख स्थित होय अपने पतिको मुख मनकी आरसीमें देखले तो वाको पति या पापसों मुक्ति पावे।

२१ शिक्षा–हे अर्जुन! जिस मनुष्यको जीव किसी पदार्थको भोजन मांगे और वह जीवको

विमुख राखे तो इस दोषके कारण वह मनुष्य यही जन्ममें सदादुःखी और निराश रहे फिर मृत्यु समय जीव वाही पदार्थमें जाय प्राप्त होय । यह सुनके अर्जुनने प्रश्न कियो कि हे नाथ ! निर्धन मनुष्य जीवकी प्रसन्नता कैसे करे ? श्रीकृष्णजीने कही कि निर्धन मनुष्य जीवकी प्रसन्नताके लिये रविवारको जन्म नक्षत्रमें अथवा अमावस्याके दिन श्रद्धाके अनुसार मनमांगे पदार्थको भोजन करे तो परमेश्वर वाके मनकी कामना पूर्ण करे !

३२ शिक्षा—हे अर्जुन ! जो मनुष्य किसीको कोई वस्तु पुण्य अर्थ अथवा और भांति देनी करलेवे फिर भूलके याअहंकारके कारण नहींदेय तो महादोष है अगले जन्ममें देयगा इसलिये और वह मनुष्य याको प्रलाप करके लेइगो इस लिये मनुष्यको उचित है, कि जो मुखसों कहै वाको पूर्ण करे ।

३३ शिक्षा–हे अर्जुन ! जो मनुष्य कुछ लेकर बेटीको विवाह करे सो या महापापके फलसों सदा निर्धन और दरिद्री रहे और वह पितृदेवसों व तर्पणसों विमुख होइके नरकमें जाइके वासकरे ।

३४ शिक्षा–हे अर्जुन ! जो कोई मनुष्य किसीसों कुछ मांगे और वह मांगी भई वस्तु दे देवे तो या पुण्यको फल अश्वमेध यज्ञ समान है क्योंकि पूर्णब्रह्म परमेश्वरकी प्रसन्नताके लिये जीवहीकी प्रसन्नताका स्नेह है ।

३५ शिक्षा–हे अर्जुन ! मनुष्यको चाहिये कि किसीसों कुछ मांगे नहीं, परमदयालु परमेश्वरने जो दिया है वाहीमें संतोष राखे ।

३६ शिक्षा–हे अर्जुन ! जो मनुष्य कामनाके अर्थ चौकी या चारपाई या धरतीपे बैठके पर-ब्रह्म जगदीशको पूजन करे तो फलदायक नहीं

होय इसलिये मनुष्यको अवश्य है कि स्वच्छता-सों पवित्रस्थानमें मृगछाला अथवा ऊन वस्त्र या आसनपै स्त्रीसहित चौरस बैठके और पूर्व या उत्तरकी ओर मुख करके त्रिलोकीनाथके पूजन और ध्यान स्मरणमें मन लगावे तो फलदा-यक होय ।

३७ शिक्षा--हे अर्जुन ! जो मनुष्य श्रीगंगाजी या और किसी तीर्थ या मूर्तिके स्नान दर्शनको जायके परनारिनपै कुदृष्टि करे तो या पापसों कभी नहीं छूटै और अंतकाल यमराजके दूत वा पापीको नरकमें लेजायके लोहकी ताती सींक वाकी देहमें लगायके अनेक प्रकारसों वाको ताप देवे । यह सुनके अर्जुनने श्रीकृष्णजीकी स्तुति करके यह विनती कीनी कि, हे वासुदेव ! मधुसूदन जगद्गुरु अंतर्यामी ! कृपा करके कुछ और आज्ञा कीजिये यासों तमोऽज्ञान दूरि होय और

दीपकरूपी ज्ञानसों हृदय-महलमें चांदनी हो । तब श्रीकृष्णजीने कही ।

३८ शिक्षा-हे अर्जुन ! श्रीगंगाजीके स्नान करनेको जो मनुष्य पगरखी (जूती) पहनके जाय सो, तीर्थमें उतारनेके कारणसे स्नानको फल नहीं पावे ।

३९ शिक्षा-हे अर्जुन ! जो मनुष्य चार मनुष्योंमें बैठके कुछ सामग्री मँगवायके आपही भोजन करै औरनको नहीं देइ तो या पापसों मुक्ति नहीं पावे, महा दोष है, परन्तु गरीबको दोष नहीं ।

४० शिक्षा-हे अर्जुन ! जो मनुष्य आदित्य वारको द्वादशी अमावास्याको व्रत रखे और खिचड़ी खाय सो यापापके कारण और पदार्थनसों सदा विमुख रहे और वाकी सन्तान नहीं जीवे ।

४१ शिक्षा-हे अर्जुन ! द्वादशीके दिन पुराणको पाठ करनो और सुननो अयोग्य है क्योंकि वा

दिन व्यासजी महाराज दिनभर परब्रह्म देवरूपके पूजन और ध्यानमें मनको स्थित कर बैठते हैं कदाचित् कोई पुराण बांचे तो उनका मन ध्यान अवस्थासे पुराणकी ओर चलायमान होय।

४२ शिक्षा—हे अर्जुन ! व्रतके दिन और आदित्यवारको दर्पणमें मुख देखे तो अयोग्य है।

४३ शिक्षा—हे अर्जुन ! जो जिस चारपाईपर मनुष्य विवाहिता स्त्रीके संग सोवे वाको भाई बेटे अथवा और किसीको दे तो महादोष है।

४४ शिक्षा—हे अर्जुन ! जो मनुष्य किसीका तिल लेके भोजन करें तो बड़ा दोष है यह सुनके अर्जुनने प्रश्न कियो कि, हे दीनबन्धु दीनानाथ ! कदाचित कोई भाई अथवा हितू आदि तिल खवावे तो किस रीतिसों यह दोष निवृत्त होय ? श्रीकृष्णजीने कही कि प्रथम तो भोजन नहीं करे और भोजन करे तो बदलेमें खवाय दीजे नहीं तो

ब्राह्मणको देवे क्योंकि तिलदानको बडो फल है।

४५ शिक्षा–हे अर्जुन! जो मनुष्य लिंगी करके जल नहीं ले और अपवित्र रहे वह जो सुकर्म करे ताको फल प्राप्त नहीं होय।

४६ शिक्षा–हे अर्जुन! जो मनुष्य मनको रोकिके और एकचित्त होके प्रीतिभावसों चौरस बैठिके कथा श्रवण करते हैं सो वैकुण्ठधाममें नाना प्रकारके सुख पावेंगे।

४७ शिक्षा–हे अर्जुन! जो कोई मनुष्य किसी की अमानत धरी हुई वस्तुको अपने कब्जेमें करलेवे सो या पापके फलसों अंतकाल नरकमें जायके अनेक प्रकारके दुःखोंका भागी होय और उसकी स्त्री बांझ हो जाय।

४८ शिक्षा–हे अर्जुन! जो मनुष्य विना अपराध अपनी विवाहिता स्त्रीका त्याग करे और गायनमें जायके बिचार किये विना मैथुनकालमें

गऊको डरावे भगावे तो इन पापनसों वह आप नरकमें जाय और उसकी संतान बावली हो ।

४९ शिक्षा—हे अर्जुन । जिस समय कर्जदारके घर ब्यौहारी आइके अपने रुपैयनका तकाजा करे और क्रोधकरके सौगंद खाइके वा द्वारपर बैठे उस समय कदाचित कर्जदार अपने घरमें स्नानकरके अन्न और जल खाय तो इस पापसे महादुःखी होय और तीन जन्मलों दारिद्र और विपत्तिमें रहे ।

५० शिक्षा—हे अर्जुन । जो मनुष्य अपने कुटुम्बके मनुष्यकी अथवा अपने नातेदारकी बुराई करे सो या पापके कारण पुत्रका मुँह नहीं देखेगा ।

५१ शिक्षा—हे अर्जुन । जो मनुष्य अपनी स्तुति अपने मुखसों करै अथवा औरनके मुखसों अपनी बड़ाई सुनिके प्रसन्न होय सो अन्तकाल

नरकमें जायके बास करै इसलिये मनुष्यको अपनी बड़ाई सुनकर हर्षित होना अयोग्य है ।

९२ शिक्षा–हे अर्जुन ! जो मनुष्य बाग अथवा बागके वृक्षनको काटे और तालाब पोखराको माटीसों ऑंटे और पढ़ी हुई विद्यापै ध्यान नहीं धरे और अनीति रीतिपै चले सो या पापसों मुक्ति नहीं पावै और अंतकाल नरकमें जाय ।

९३ शिक्षा–हे अर्जुन ! जो मनुष्य बैल और घोड़ाको अखता अर्थात निरुडो करे सो या पापके फलसों धन सन्तानको सुख नहीं देखे, और अगले जन्ममें हिजड़ा होय,कदाचित् अपने पुण्यके सुकर्मते आप हिजड़ा नहीं होय तो उसके पुत्र अवश्य हिजड़े होयँ और दरिद्र होय क्योंकि उस पापके समान कोई पाप नहीं है ।

९४ शिक्षा–हे अर्जुन ! जो मनुष्य रुपैयनके बदले पृथ्वीको अपने कब्जेमें लावे सो या पापके

कारण आँखनसे अंधो होय और संतानको सुख नहीं पावे, उसको पुत्र जवान होयके मर जायँ ।

५५ शिक्षा—हे अर्जुन ! पिता और बड़े भाई और जो मनुष्य आपसों उमरमें बड़े होयँ तो उनको खोटा बचन बोलना महापाप है ।

५६ शिक्षा—हे अर्जुन ! जो मनुष्य चरती हुई गायको जंगलमें डराइके भगावैं सो या पापसों मुक्ति नहीं पावे और अगले जन्म निपुत्र रहे ।

५७ शिक्षा—हे अर्जुन ! जो मनुष्य अपने स्वामी अथवा अपने पिताके संग युद्धस्थानमें जाय और युद्ध करनेको असमर्थ होय स्वामीको छोड़के भाग जाय तो या महापापसों वाका सब शरीर राध पड़के गल जाय ।

५८ शिक्षा—हे अर्जुन ! जिस मनुष्यने अपनी अवस्थामें कभी स्त्रीसहित श्रीगंगाजी और तीर्थमें स्नान नहीं कीनों अथवा नादारी वा नातेदार

रनकी लज्जासों तीर्थस्नान वाको प्राप्त नहीं भयो वाको जीवनो संसारमें नरकके समान है इसलिये मनुष्यको अवश्य है कि, स्त्रीसहित तीर्थस्नान करके जो कुछ श्रद्धा होय सो पुण्य करै सो अश्वमेध यज्ञका फल पावै और उसके पुरुषा सदा सुखी रहैं। यह सुनके अर्जुनने प्रश्न कीनो कि, हे जगदीश अन्तर्यामी ! जिस मनुष्यको नातेदारनकी लाज और नातेदारीसों स्त्रीसहित तीर्थस्नान प्राप्ति नहीं होय तो उसको कहा कर्तव्य उचित है ? श्रीकृष्णजीने कहा कि, जब पूर्णमासी या संक्रांति या सिद्धयोग या अमावास्या या जन्मनक्षत्र या व्यतीपातादि शुभ वार आवें तब स्त्रीसहित किसी नदी या तालाब या हौज कूयेपै या घरमें स्नान करिके श्रद्धा होय सो पुण्य करे तो यज्ञके समान फलदायक होय और पिछले किये हुए पापसों मु पायके वैकुंठधाम पावे, अर्जुन ! यह वार्त्ता

चारों वेदोंमें गुप्तहै देवतानमें भी कोई नहीं जानता जो तू या वस्तुको ग्राहक है तेरा हित विचारके कहत हौं ।

५९ शिक्षा–हे अर्जुन ! मनुष्यको चाहिये कि किसीका परदा नहीं उघारे क्योंकि यह महादोष है ।

६० शिक्षा–हे अर्जुन ! जो मनुष्य व्याई भई गऊका दूध ८० दिनतक बछराको न्यारा करके दोहे और बछराको चुखवावे नहीं तो या दोषसे निपुत्र होय और बहुत वर्ष नरकवासी होय ।

६१ शिक्षा–हे अर्जुन ! अपने कबीलेको घायल करना अथवा जीवसों मारना या उसकी बुराई करना बड़ा पाप है ।

६२ शिक्षा–हे अर्जुन ! जो मनुष्य किसीके हिस्सेपर अपना कब्जा करले तो अवश्य उसकी स्त्री कुकर्मी होय और आप जन्मभर दरिद्री और निपुत्र रहे कदाचित् पुत्री होवेभी तो विधवा हो-

जाय, कोई पानी देनेवाले नहीं रहे। चार जन्मलों आँखिनसों अन्धा होय और अन्तकाल यमराजके दूत वा पापीको नरकमें लेजायके लोहेके ताते खम्भनसों बांधिके अनेक प्रकारकी मार मारें और सदा दुःखी राखें।

६३ शिक्षा–हे अर्जुन! जो मनुष्य चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहणमें रोटी खाय या पानी पीवे या लघ्वी करै या बर्तनमें पानी भरे तो महादोष हैं। चन्द्रमा और सूर्यके शापते धन सन्तानको सुख नहीं पावे और नरकमें जाय।

६४ शिक्षा–हे अर्जुन! जो मनुष्य दिशा जायके बचे हुए जलसों हाथ पांव धोवै तो महादोष है उसके कुटुम्बके मनुष्यनको प्रेत दुःखी करें क्योंकि वह जल प्रेतनके भागका है भूलकर भी ऐसा करना नहीं चाहिये।

६५ शिक्षा–हे अर्जुन! जिस मनुष्यके संतान

नहीं होय उसको जीवनो संसारमें तुच्छ है या सुनके अर्जुन प्रश्न कीनो कि; हे स्वामी ! पुत्रहीन मनुष्यको किसके हाथनको तर्पण पहुँचे ? श्रीकृष्णजी इस बातपै हँसे और कहा हे अर्जुन ! यह गुप्तवार्ता जो मैं तेरे आगे कहता हूँ सो देवता भी नहीं जानते इसपै अमल करनो यज्ञके तुल्य फलदायक है जो निपुत्र मनुष्यकी स्त्री सुशीला होय और प्रीतिभावसों मनको शुद्ध करिके तर्पण और श्राद्ध करे तो वाके पतिको जल पहुँचे और ऐसी पुनीत स्त्रीके सुकर्म धर्मसों वाकी सात कुली वैकुंठमें जायँ और उसका पति कदाचित् अपने पापनकेकारण नरकवासी होय तो भी वैकुंठधाम पावे ।

६६ शिक्षा—हे अर्जुन ! द्वादशी. अमावास्या, रविवारको शरीरमें तेल मलनेका महादोष है ।

६७ शिक्षा—हे अर्जुन ! गृहस्थीके घरमें पीपल आदि वृक्षको रखनो नहीं चाहिये क्योंकि प्रति-

दिन एकबार पितृदेव अपने पुत्रके घरमें आते हैं जो पितृ वहां ब्राह्मणको मिठाई भोजन करते देखे तो प्रसन्नतासों आशीर्वाद देइँ और वृक्षके देव भूत प्रेतादिकको वास देखकर उनसे डरके घरमें नहीं आवें शाप दे जायँ वह मनुष्य निर्द्धन होके सदा दुःखी रहै इसलिये घरमें वृक्षको राखनो और घरमें पीपलके वृक्षके नीचे दीपक बालनो भी अशुभ है ।

६८ –शिक्षा–हे अर्जुन। मनुष्यदेह बड़ी कठिनाईसो अथवा बड़े जप तपके फलसों प्राप्त होती है सो देह पाइके अहंकारी फांस गलेमें डाललेनी अयोग्य है। देखो सदा शिरके बाल तो मौतके हाथमें रहते हैं और न जाना जाय किस समय शरीरसों जीव न्यारो हो जाय।तिसपै मनुष्य कहे हैं कि,अब लडकाई है,अब जबानी है, बुढापेमें स्मरण भजन कियो जायगो, यह बडी भूल है।

जो क्षणभर देहपै झूठा भरोसा करें, मनुष्यको उचित है कि, क्रोध लोभको त्याग करै, अहंकार और बुराईसों अलग रहै, ईश्वरने जो दिया है उसीपै सन्तोष रक्खै। हर्ष,शोक, हानि, लाभ, भले, बुरेको समान जानके जब जीवनको पूर्णब्रह्म परमेश्वरमय एकसा देखे फिर सदा सच्चिदानंद नारायणके चरणारविंदमें मन लगाके महाप्रसन्नतासे स्मरण करे क्योंकि अंतकाल न माता सहायक न पिता न भाई न हितू जो सुकर्म किये जायँ सो सहायता करते हैं ।

६९ शिक्षा—हे अर्जुन ! जिस मनुष्यने पीपलको प्रतिदिन जल नहीं दीनो और महादेवको व्रत पूजन पक्ष पक्षमें नहीं कीनो उसका शरीर बैलके समान है। वह सदा निर्द्धन और दुःखी रहै । यह सुनिके अर्जुनने प्रश्न कीनो कि, हे वासुदेव जगद्गुरो

किसीको नित्य पूजन प्राप्ति नहीं होय सो कहा करे?श्रीकृष्णजीने कह्यो कि, शनीवारको वृक्षराज पीपलकी जड़में ब्रह्मा त्वचामें विष्णु, शाखामें महादेव,पात पातमें देवतानको वास होता है। सब तीर्थ पीपलमें वास करते हैं इसलिये जो मनुष्य प्रति शनिवारको नियम करके पीपलका पूजन परिक्रमा करता है और कभी कभी पीपलके नीचे ब्राह्मणोंको भोजन करावे और आप भोजन करै तो इस महापुण्यसों देवनके आशीर्वाद पाइके धन संतानको सुख पावै मनकामना पूर्ण होय। यमके दूत वासों डरिके भाजें या भांतिसों पीपलको पूजन तीर्थस्नान और यज्ञके समान फलदायक है और फाल्गुनमें कृष्ण पक्षकी चतुर्दशीको महादेवजीका व्रत धारण करै, रात्रिको जागरण करै और प्रहरांत २ में चारों वेदोंसे गायका दूध गंगाजल शहदादिकसों महादेवजीको स्नान कराय विधिपूर्वक पूजन करे यह

एक वर्ष दिनके सब व्रतनके समान फलदाक है । इस व्रतके फलसों किये हुये पिछले पाप नाश होजायँ शिवलोकमें वास पावे, मनोकामना पूर्ण होजायँ । कदाचित् पुरुष व्रत न राख सके और महादेवको प्रीतिसहित पूजन करे तो इतनो पुण्य होय जो लिखनेमें नहीं आवे ।

दोहा ।

सुधापयोधी लहरसुख, उमँग्यो अर्जुनहीय ।
परमगुह्य वाणी सुनत, तृप्ति न पावत जीय ॥

जब अर्जुनने यह वार्त्ता श्रीकृष्णजीके मुखारविंदसों सुनी तब अति प्रफुल्लतासों चरणारविंदमें शिर नाइके दोऊ कर जोरिके स्तुति करिके विनती कीनी कि,हे दीनदयालु ! जो वार्त्ता मुखारविंदसों आज्ञा दीनी उसके सुननेसों बुद्धि बढती है सो

कृपा करिके और कछु आज्ञा कीजिये, श्रीकृष्ण-जीने कहा हे अर्जुन! यह पुरानी वार्त्ता वेदनसों तेरे आगे कही अब और कहताहूँ चित्त लगायके सुन।

७० शिक्षा--हे अर्जुन! मनुष्य स्नान करके गूलर और महुवा वृक्षके नीचे जाय तो चौथाई फल स्नानका वृक्षनको प्राप्त होय। यह बात सुन अर्जुनने इसका कारण पूछा, श्रीकृष्णजीने कह्यो कि नृसिंह अवतारने जब हिरण्यकशिपु दैत्यका पेट नखसों फाड्यो तब नृसिंहजीके नखमें ज्वाला उठी सो वहाँ महुवा और गूलरके वृक्षही दृष्टि पडे तब दोऊ वृक्षनके पत्र लगाये नखनकी ज्वाला मिट गई ताहि समय नृसिंहजीने कृपादृष्टिसों उनको आज्ञा कीनी जो स्नान करिके तुम्हारे नीचे आवे वाके न्हा-यबेको चौथाई फल वृक्षनको मिले। अर्जुनने प्रश्न कीनो कि, हे स्वामी! जो मनुष्य भूलके चलाजाय

तो कैसे वाको फल बचे ? श्रीकृष्णजीने कह्यो कि, श्रीनृसिंहजीको नाम तीन वार लेवे वासों उसका फल बचै, वृक्षको नहीं पहुँचे ।

७१ शिक्षा–हे अर्जुन ! स्नान करिके चार पाईपै बैठने और बाहर जायके औरनसों मिलाप करनेसों न्हायबेको पुण्य जाता रहता है, इसलिये स्नान करके कुछ खायके जहां चाहे तहां जाय तो कुछ दोष नहीं ।

७२ शिक्षा हे अर्जुन ! आंबके वृक्ष अथवा बागके दशवृक्ष लगायबेको पुण्य हजार यज्ञके बराबर है इसलिये मनुष्यको अवश्य है कि सम्पूर्ण बागके लगायबेकी सामर्थ्य नहीं होय तो मेवाके पांच वृक्ष कहीं सुठौरमें लगायके जीवको सफल करै क्योंकि वृक्षनसे बड़ा लाभ है और लगायबेको पुण्य अश्वमेघयज्ञके समान है और मेह वर्षे वृक्ष-नके पत्रसों जो जलकी बूँद पृथ्वीमें परे उसका

पुण्य जैसे पतिव्रता स्त्रीको अपने पतिकी सेवा करनेको पुण्य फलदायक है और इस अपार पुण्यकी महिमा लिखनेमें नहीं आवे और जो मनुष्य वृक्ष लगावें वाकी पांच पीढ़ीनके पुरुष वैकुंठ धाममें वास पावें।

७३ शिक्षा—हे अर्जुन! जो मनुष्य तुलसीका वृक्ष अपने घरमें राखे और प्रतिदिन स्नान करके वापै जल चढ़ावे चन्दन,अक्षत, पुष्प, मिठाईसों पूजन करे और रात्रिको तुलसीके स्थानपे दीपक बारे तो उसके घरमें यमराजके दूत नहीं आने पावैं और लक्ष्मीको प्रकाश रहे और यह सुकर्म अश्वमेध यज्ञके समान फलदायक है और कदाचित् तुलसीका पूजन प्रतिदिन नहीं बन आवे तो कार्तिक और अगहनमें प्रतिदिन तुलसीको पूजन करे और आंवलाके वृक्षनके नीचे जायके ब्राह्मणको भोजन करावे तो भी बड़े यज्ञके समान

फलदायक है, परन्तु रविवारके दिन आंवलेको पूजना नहीं चाहिये।

७४ शिक्षा हे अर्जुन! जो कुँवारा मनुष्य तर्पण और श्राद्ध करे तो उसके पितृदेवतानको नहीं पहुँचे।

७५ शिक्षा—हे अर्जुन! जिसके घरमें वांझ स्त्री होय उसको यही संसारमें नरक है वा स्त्रीके हाथनसों अन्न और जल खाइबो महादोष है या पापसों मुक्ति पानी कठिन हैं और इस जन्ममें वाके मुखमें दुर्गन्धि हो। यह सुनिके अर्जुनने प्रश्न कीनो कि, जो ऐसी स्त्री अपने कुटुम्बमें अथवा नातेदारनमें होय और वह स्त्री कुछ खवावे तो उसकी कैसे या पापसे मुक्ति प्राप्त होय? तब श्रीकृष्णजीने कहा कि जो भोजन करते समय प्रथम अनंतशक्ति भगवान् परब्रह्म कमलनयनका नाम लेके प्रार्थना करे, कि

तूही अघमोचन भयभञ्जन अधम उधारन है फिर एक ग्रासपै ज्योतिस्वरूपको नाम लेके जल ले पृथ्वीपे डारै और भोजन करे तो दोष नहीं लगे वा सुकर्मसे धन सन्तानकी वृद्धि होय।

७६ शिक्षा–हे अर्जुन ! जो कोई मनुष्य पानीका लोटा अथवा घंटी किसी दूसरे मनुष्यके लिये लावे और वह हाथसों लेके पीवे तो दूषित है इसलिये मनुष्यको अवश्य है कि, जलकी घंटीको दूसरेके हाथसों लेके प्रथम पृथ्वीपे धरे फिर उठाके आप जल पीवे तो दोष नहीं लगे।

७७ शिक्षा–हेअर्जुन ! मनुष्य जिस पात्रमें भोजन करे वाको मांजे नहीं और बची हुई जूठनको वाही पात्रमें राखे तो महादोष है। अन्न-देवके शापते वह मनुष्य सदा दरिद्री और दुःखी रहै।

७८ शिक्षा हे अर्जुन ! जो मनुष्य अपने

घर और आंगनको प्रतिदिन झाडूसे (बुहार) सफा न राखे सो वह महादेव पितृदेवतानके शाप करकै छठे महीने निर्धन होजाय और यह बात भी जाननी चाहिये कि, पिताके पापनसों पुत्र दरिद्री हो जाय और स्त्रीके पापनसों पति वैकुण्ठसे नरकको जाता है ।

७९ शिक्षा—हे अर्जुन ! नदी, हौज, कुआँको छोडके घरमें ताते जलसों स्नान करना सफल नहीं होय। यह सुनिके अर्जुनने प्रश्न कीनो कि नदी कुआं नहीं मिले तो क्या करना उचित है ? श्रीकृष्णजीने कहा ताते जलमें हाथ न डारे तो गंगाजलके तुल्य है, हे अर्जुन ! इन वार्त्तानमें ध्यान धरना बडा कठिन है, परंतु जो कोई भगवान्के भक्त बुद्धिमान् हैं सोई मनकी शुद्धि करके ध्यान धरते हैं। यह सुनके अर्जुनने बडो शोच कीनो और श्रीकृष्णजीके चरणारविन्दमें

शिर नवायकर विनती कीनी कि, हे सच्चिदा- नंद वासुदेव ! इन वार्तानमेंसे कुछेक तो अमलमें आयी हैं और कुछेक नहीं आयीं सो कैसे करे ! अन्तसमयमें मुक्ति प्राप्ति होयगी ? ऐसे शोच- समुद्रमें बूड़चा देखिके अति दयालुतासे आयसु देके आज्ञा कीनी ।

दोहा–बीतीपै नहिं शोच कर, धीरज मनमें धार ।
ध्यान धरो इस ज्ञानपै कटै पाप निरधार ॥

८० शिक्षा–हे अर्जुन!जो मनुष्य स्नान करके ललाटमें तिलक नहीं लगावे तो उसको न्हायबो पशुके समान है कदाचित् वह ब्राह्मण खौर तिलक करै तो उसको दंडवत् करनो अयोग्य है और उसके माथेपर ऐसो तिलक देखबेको बड़ा दोष है और जो मनुष्य सदा स्नान करके मस्तकपै तिलक लगावे वाको देखके यमराजके दूत कुढ़ते हैं और जरते है ।

८१ शिक्षा–हे अर्जुन! जो मनुष्य अपने मनमें संकल्प विकल्प करके निशि दिन शोच समुद्रमें बूडचोरहै सो सुख स्वप्नमें भी नहीं देखे इसलिये मनुष्यको अवश्य है कि जो होतव्यपे दृष्टि राखिके सुख दुःखको समान जाने और ईश्वरके स्मरण भजनमें सदा मनको प्रसन्न राखे।

८२ शिक्षा–हे अर्जुन! मनुष्य देह लई सो महापुनीत है क्योंकि मनुष्यदेह बहुत कठिनाईसों प्राप्त होती है कदाचित देहीको मनमाना भोजन प्रतिदिन प्राप्त नहीं होय तो पूर्णमासीको अवश्य भोजन करना चाहिये याको महापुण्य है।

८३ शिक्षा–हे अर्जुन! जो मनुष्य मसूर,गाजर, लहसुन खाते हैं वाको नरकमें भी ठौर नहीं मिले क्योंकि इन तीनोंके बीज मनुष्यके पेटमें इक्कीस २१ दिनलौं रहते हैं २१ दिनमें मृत्युकाल आय जाय तो नरकमें बास पावे। यह सुनके अर्जुनने प्रश्न कीनो कि, हे त्रिलोकीनाथ! किसीने इनमेंसों

एक वस्तु खायी होय पाछे बीमारी आय घेरे और मृत्युकाल आय पहुँचे तो यह पाप कैसे दूरि होय? तब श्रीकृष्णजीने कही गंगाजल पीवे तो यह वस्तु पेटमेंसों निकल जाय और दोष निवृत्त होय।

८४ शिक्षा—हे अर्जुन! जो मनुष्य अपने घरमें एक दीपक आठौं प्रहर जलाये राखे और किसी समय बुझने न देइ तो वाके पितृदेव अतिप्रसन्नता सों आशीर्वाद देइ तो यासों धन सन्तानकी वृद्धि होय और अगले जन्ममें वह मनुष्य भगवान्‌की अतिदयालुतासे धन सन्तानको परम सुख पावे और अन्तसमय वैकुण्ठधामको वास पावे।

८५ शिक्षा—हे अर्जुन! जो मनुष्य भोजन करके बची भई जूठनको दूसरी बार खाय अथवा और कोऊको खवावे तो वह या महा-दोषसे अवश्य दरिद्री होय।

८६ शिक्षा—हे अर्जुन ! जो मनुष्य अँधेरी रात्रि में भोजन करें अथवा भोजन करनेमें दीपक बुझ जाय और भोजन किये जाय सो या दोषके कारण धन संतानको सुख नहीं देखे क्योंकि ऐसे समय को भोजन प्रेतसंग भोजन करनेके समान है ।

८७ शिक्षा—हे अर्जुन ! जो मनुष्य अपने शिरकी बांधी पगडी किसीको देवे तो बडा दोष है क्योंकि इसकी बुद्धि घटके जिसने पाग लई वाकी बुद्धि बढती है ।

८८ शिक्षा—हे अर्जुन ! दक्षिणकी ओर पांव करके सोवे तो बडो अशुभ है ।

८९ शिक्षा—हे अर्जुन ! लडकी ४ वर्षलों पार्वती ६ वर्षलों कन्या कहावती है । मनुष्य इस अवस्थामें लडकीका विवाह कर दे तो बडे यज्ञके समान पुण्य होता है और कदांचित्

बारहवर्षसों अधिक लड़कीकी अवस्था बीत जाय और तिसका विवाह नहीं करे तो महादोष है।

१० शिक्षा—हे अर्जुन! जो मनुष्य शिरपै अँगोछा बांधे और अकछा रहे अर्थात् कमरमें धोती नहीं राखे वाके सगरे किये हुए पुण्यनाश होजायँ और पापकी फांसमें फँसे और अंतकाल नरकमें वास पावे और उसके पितृदेव नरकवासी होयँ क्योंकि उसके पांव पृथ्वीपै धरनो ऐसो है जैसे गऊको धरतीपै डारके वापै पांव धरे।

११ शिक्षा—हे अर्जुन! बासी जलसों तर्पण करनो लोहूके समान है या पापके कारण मनुष्य अन्तकाल घोर नरकमें जायके राध और लोहूके भरे हुये कुण्डमें वास करें।

१२ शिक्षा—हे अर्जुन! हाथ कान अथवा गलेमें सोना राखनो महापुनीत है, क्योंकि

स्नान करनेके समय जो जल सोनेसों लगके शरीरपै पडे सो गंगाजलके समान है।

९३ शिक्षा–हे अर्जुन! गंगाजी आदि तीर्थोंमें नहाये पहिले धोतीको धोवना महादोष है।

९४ शिक्षा–हे अर्जुन! जिस कुटुंबमेंसे कोई एक मनुष्य तीर्थपै जाय तो वाको चाहिये कि प्रथम स्नान करे फिर तर्पण होम कालक्षेत्रके विचारपै करे तो तर्पणको फल प्राप्त होय है।

९५ शिक्षा–हे अर्जुन! जो बीमार गंगाजी अथवा और तीर्थमें जायके मृत्यु पावै वाको दाहक अर्धजला करके क्षेत्रमें बहावै तो या महा दोषसों अन्तकाल नरकवासी होय और वाको भस्म करके दाहस्थानमें भस्मीको सात दिनलों चौकस करे गऊके सिवाय कुत्ता बिल्ली गधे आदि चौपाये और स्त्रीकी छाया भस्मीपै पड़ने नहीं देवे फिर आठवें दिन स्नान करके भस्मीको

क्षेत्रमें पधरावें और क्षेत्रकी मृत्तिकासों दाहस्थानको शुद्ध करे तो जगत्के सर्व तीर्थनके स्नान और बड़े बड़े यज्ञके फल पावे और प्राणी वैकुण्ठ-वास पावे और दाहकको सदा अशीश देता रहे।

१६ शिक्षा–हे अर्जुन! मेहवर्षनेमें सूर्य उदय होय तो वा समयको स्नान गंगास्नानके समान फलदायक है, जो देवतानको प्राप्त नहीं हो जाता है।

१७ शिक्षा–हे अर्जुन! सूर्यास्तमें भोजन करनो जल पीनो या दिशा जानो महादोष है, क्योंकि वा समय सूर्य और दैत्योंमें युद्ध होता है इस लिये मनुष्यको अवश्य है, कि संध्यासमय त्रिलोकीनाथके ध्यान स्मरणके सिवाय और कोई काम नहीं करै और अर्द्धास्त सूर्यको जल तर्पण करै और जो मनुष्य सूर्यास्त समय नीच कर्म करे सो बहुत वर्ष निर्धन और दुःखी रहे और

इस बातपै भी ध्यान करनो चाहिये कि, सन्ध्या समय चार घड़ी दिनसे चार घड़ी रात्रि रहेसे घड़ी दिन चढ़ेतक सोवे तो महादोष है जो मनुष्य इन दोऊ समयमें परमदयालु परमेश्वरके ध्यान स्मरणमें मन लगाये रहे और पुराणका पाठ करे तो वह समस्त पापनसे मुक्ति पायके सुखस्थानमें बास पावे और सुशील संतानका सुख देखे ।

९८ शिक्षा–हे अर्जुन ! जो मनुष्य हाथपै धरके रोटी खाय तो थोड़ेही कालमें दरिद्री होय ।

९९ शिक्षा–हे अर्जुन ! जो मनुष्यके सम्पत्ति धन संतानपै जोर करे सो इस लोकमें निर्धन होय और परलोकमें नरकवास पावे और अगले जन्ममें निपुत्र होय ।

१०० शिक्षा–हे अर्जुन ! दोहा "जिस नरके हो सुत नहीं; तापै कर अभिमान । सो जन या

संसारमें, ना पावे सन्तान" ॥ अन्तकाल नरकमें-वासी होय, दूजे जन्म निपुत्र होय।

१०१ शिक्षा—हे अर्जुन! जिस स्त्रीके बालक पैदा होय उसके हाथसे ४५ दिनतक अन्न और जल खाय तो या दोषते उसके पितृदेव बैकुण्ठसे नरकमें जायँ यह सुन अर्जुनने प्रश्न कीनो कि, हे दीनदयालु! जो मनुष्य निर्धन और अकेला होय तो किस प्रकार या दोषते बचे? श्रीकृष्णजीने कह्यो कि २३ दिन अथवा १३ तेरह दिन पिछे जनी स्त्री गंगाजलसे स्नान करके जो सामर्थ्य होय सो पुण्य दान कर दे तो उसके हाथसे भोजन करनेका दोष प्राप्त नहीं होय, अर्जुन यह शिक्षा श्रीकृष्णजीके मुखारविंदसे सुनिके बहुत शोच कीनो, फिर दोऊ कर जोड़के विन्ती कीनी कि हे त्रिलोकीनाथ! इन बातनको सुनिके चितमें दीपकके समान उजेरा हुआ सो कृपा करिके और आज्ञा

कीजिये । श्रीकृष्णजीने कह्यो कि, जिन वार्त्तानको मुनीश्वर और ऋषीश्वर नहीं जानते सो तेरे आगे कहता हूं मन लगायके सुन ।

१०२ शिक्षा–हे अर्जुन ! जो मनुष्य चित्तकी प्रसन्नतासे कुछ दान पुण्य करे सो अधिक फल पावे और मनमें उदास होयके अथवा क्रोध करके पुण्यदान करै और जिसको दान देइं ताके मनको दुःखी करे तो पुण्य निष्फल जाय और पातकी होय ।

१०३ शिक्षा–हे अर्जुन ! जो मनुष्य अपने बेटेको किसीकी गोद देवे तो उस पुत्रके हाथको जल उसको नहीं पहुंचे और कदाचित दिये पुत्रको फेरि लेवे तो वह पुत्र जवान होइके मरि जाय अथवा उसके बदले दूसरो पुत्र मरै और अगले जन्ममें धन संतानको सुख नहीं पावे और नरकवासी होय। यह सुनिके अर्जुनने प्रश्न कीनो कि हे सच्चिदानन्द ! कोई

मनुष्य अज्ञानतासे दिये पुत्रको फेर लेवे तो इस पापसे कैसे मुक्ति पावे ? श्रीकृष्णजीने कहा हे अर्जुन ! वह मनुष्य अपनी स्त्री और उस पुत्र सहित गंगाजीमें स्नान करके पीरी लाल धौरी धूमरी काली पांच रंगकी पांच गऊ, जो, दूध देती हों और उनकी खुरी पीठ और सिंगोटी सुवर्णमयी मढी गयी होय ब्राह्मणको पुण्य करे और परब्रह्म परमेश्वरको दंडवत् करके अपना अपराध क्षमा करावे तो इस बड़े पापसे मुक्ति पावे और उसको पुत्रके हाथका तर्पण पहुँचे।

१०४ शिक्षा–हे अर्जुन ! जो मनुष्य युद्ध करनेको युद्धस्थानमें जायके धन और बलके अहंकारसे वैरीको बुरा वचन बोले और गालियां देवे तो इस पापके कारण वैरीसे युद्धमें हारके युद्धस्थानसे निष्फल भागे।

१०५ शिक्षा—हे अर्जुन ! जिस समय युद्धकरते करते एक मनुष्य असमर्थ होयके दूसरेकी शरण आवे इस समय कदाचित् वह मनुष्य शरण आयेको जीवसे मारे अथवा घायल करे तो इस पापसे उसके पुत्र जवान होयके मरें और अगले जन्ममें उसकी स्त्री वांझ होय ।

१०६ शिक्षा—हे अर्जुन ! जो मनुष्य कागज अथवा लकडेपै मनुष्य आदिका चित्र बनावे सो या महादोषके कारण इस जन्ममें अथवा अगले जन्ममें धन और संतानको सुख नहीं देखे और आंखनसे अंधा होय क्योंकि चित्र निर्जीव है, पर श्रीमद्भगवानादि देवताओंकी प्रतिमा प्रतिष्ठा करे तो धन संतानका सुख होय ।

१०७ शिक्षा—हे अर्जुन ! जिस मनुष्यके मुख वचन उच्चारणमें थूक बाहर आवे और दूसरे मनुष्यके शरीरपै पडे सो अगले जन्ममें मूक-

रकी देह पावे और अंतकाल नरकवासी होय।

१०८ शिक्षा–हे अर्जुन ! जो मनुष्य अपने स्वामीकी आज्ञाको सुनिके जहां तहां खड़ा रहे और स्वामीकी आज्ञापै ध्यान नहीं धरै सो सदा दुःखी रहै और नरकमें जाय क्योंकि स्वामीकी अवज्ञा करना पापनमें महापाप है। यह सुनिके अर्जुनने प्रश्न कीनो कि हे यदुनाथ ! कदाचित् स्वामी ऐसी चाकरी फरमावे जो सेवकसों नहीं बन पड़े सो कैसे पापसों मुक्ति पावे ? श्रीकृष्ण-जीने कही जो सेवकसों कही कठिन चाकरी स्वामीकी न बनपड़े तो सेवकसों उचित है कि जिस दिनसों स्वामीकी आज्ञा टारी वा दिनसों जबलों स्वामी दूसरी बार किसी कामकी आज्ञा न करे और सेवक उस कामको मन लगायके न करे उतने दिन तककी तलब स्वामीसों नहीं

लेवे वह दोष दूरि हो और उतने दिनतककी तलव ले तो या पापसों धनका सुख नहीं पावे और अंतकाल यमराजके दूत वाको बड़ो दुःख देके उसकी तलब वही फेर लें। यह सुनिके फिर अर्जुनने पूछो कि हे जगदीश! सेवकसों स्वामीकी चाकरीमें चूक पडे कदाचित् वह कवीलदार और निर्धन होय तो कैसे या दोषसों मुक्ति पा वे? श्रीकृष्णजीने कही कि उस तलबसों चौथाई पुण्य करिके परमदयालु परमेश्वरसों अपने अपराध क्षमा करावे तो या पापसों मुक्ति पावे और सुखी रहै।

१०९ शिक्षा—हे अर्जुन! जो मनुष्य हवेली, तालाब, कुवां आदि वा मकान बनवावे और अधवने मकानकी भीति तथा धरतीपै बैठिके अन्न जलको भोजन करै तो महादोष है इसलिये

मनुष्यको अवश्य है कि जब सम्पूर्ण मकान बन चुके तब स्त्रीसहित वाकी प्रतिष्ठा करके परिक्रमा करे और ब्राह्मणको भोजन करायके गऊ दान करे फिर उसके पीछे कुटुम्बसमेत आप भोजन करे तो अश्वमेध यज्ञके समान फल प्राप्त होय और उसके कर्मके फलसों धन सन्तानको परम सुख पावे।

११० शिक्षा—हे अर्जुन! जो मनुष्य तीर्थस्नान अथवा दर्शन यात्राको जाय और रास्तेमें किसीकी महमानी खाय तो वह इस दोषसों जन्मभर संसारके पदार्थनसों विमुख रहे और उसकी यात्रा निष्फल जाय क्योंकि, स्नानयात्राका फल जिसने महमानी खवाई वाको प्राप्त होय। यह सुनिके अर्जुनने प्रश्न कीनो कि हे जगदीश! रास्तेमें कोई भाई या नातेदार मिले और महमानी करे तो किसी प्रकारसे यह दोष मिटै?

श्रीकृष्णजीने कही, जाती बिरियां किसीका न खाय आती बिरियां महमानी खाय तो कुछ दोष नहीं परंतु तीर्थ और देवस्थानपे भूल कर किसी भाई या नातेदारीकी महमानी न खाय और कदाचित् वे लोग बहुत हठ करैं तो स्थान यात्रासों निश्चित होयके सात बार तीर्थस्थानकी परिक्रमा करके चलती बिरियां महमानी खाय और जितनी महमानी खाय वासों बीस गुणी ब्राह्मणोंको खवावे तो वाको दोष दूरि होय और यात्रा सफल होय ।

१११ शिक्षा–हे अर्जुन! जो मनुष्य पक्षिनके घोसलेमेंसों छोटे २ जोर बच्चाको बाहर निकाल दे तो या पापसों इस जन्ममें दरिद्री होय और वाके पुत्र जवान होयके मरैं और अन्तकाल नरकमें जाय, फिर अगले जन्ममें धन संतानको सुख नहीं देखे क्योंकि उन बच्चोंको मनुष्यके छूनेके

कारण (पक्षी देखत उड़ जाय)फिर पक्षी उनको पालन नहीं करें भूखे प्याससे होके मरजायँ अथवा भूख प्यासके कारण घोसलेमेंसो निकस पडें तो बिल्ली कुत्ता उसको खा जायँ इस लिये यह अपराध उसी ही मनुष्यके शिर चढै।

११२ शिक्षा–हे अर्जुन! जो गऊको दोहती समय गऊको बाल टूटें तो बडो दोषहै। जो दूधमें बाल जाय पडे और अनछाने दूधको ताती कर मनुष्य पीवे तो दरिद्र होय क्योंकि इस पापके समान और कोई पाप नहीं इसलिये मनुष्यको अवश्य है कि दूधको छानके ताती करके पीवे।

११३ शिक्षा–हे अर्जुन! जो स्त्री वा पुरुष रोते हुए बालकको छोडके कुकर्ममें लग जायँ अथवा बालकको मारें तो नरकमें जायँ और सब पदार्थनसों विमुख होइके निपुत्र रहैं और कदाचित्

पुत्र पैदा होयँ तो जवान होयके मरजायँ और पापसों उसके पितृदेव वैकुण्ठसों नरकमें जायँ।

११४ शिक्षा—हे अर्जुन! जो मनुष्य मुख धोये विना पान या दूध आदि कुछ खाय और स्वामीकी वस्तुको विना पूछे खाय तो इसी जन्ममें दुःखी होय।

११५ शिक्षा—हे अर्जुन! वृक्षको फल तोड़नो महादोष है। फल पकजायँ तब तोडे तो दोष नहीं।

११६ शिक्षा—हे अर्जुन जो! मनुष्य चाकरकी तलब और पराया धन व नेगिनको नेग नहीं दे सो इस लोकमें और परलोकमें भलाई न पावे और या पापसों जन्मभर दुःखी और निपुत्र रहे अन्तकाल नरकमें जाय कदाचित् वाके पितृदेव स्वर्गमें होयँ तो नरकमें जायके वास पावैं।

११७ शिक्षा–हे अर्जुन ! जो मनुष्य दानकी वस्तुको पात्रमें मेलिके और पात्रको हाथमें धरके संकल्प करै ता समय ब्राह्मण स्वस्ति बोल दे तो हाथ और पात्र संकल्पमें आ जायँ इसलिये वह पात्रभी ब्राह्मणको दे देना चाहिये और हाथके बदले जबलों सुवर्ण या चांदी या तांबाको हाथ बनवायके ब्राह्मणको नहीं दे तबलों खाना पीना या जो सुकर्म वा हाथसों करे सो फलदायक नहीं होय अर्जुनने प्रश्न कीनो कि, हे यदुनाथ ! जो उस मनुष्यको पात्र और हाथ देवेकी सामर्थ्य नहीं होय तो किस प्राकार या पापसों मुक्ति पावै ? श्रीकृष्णजीने कही कि, उस मनुष्यको चाहिये कि कुपढ़ और भूखे ब्राह्मणको जो श्रद्धा हो सो दूरहीसों देदे और पुण्यको संकल्प न करै विद्वान् उच्च ब्राह्मणको देवे तो महादोष है।

११८ शिक्षा—हे अर्जुन ! ॥ दोहा ॥ "जिस नरकी नारी मरे, करै दूसरो ब्याह । ना देखे संसारमें, सुख संपत्ति उछाह ॥ १ ॥ यह सुन अर्जुनने प्रश्न किया, हे घनश्याम सुजान । याको कारण कौन है, कहिये कृपानिधान ॥ २ ॥ कही कृष्णने हे हितू, ध्यान धरो मनमाँह । ब्याह करै सुतहीन जो, तो कछु दूषित नाँह ॥३॥ जिस प्राणीके पुत्र हों, बहुरि करै वह ब्याह ॥ पावै दुःख संसारमें,बूड़े सिन्धु अथाह ॥४॥" जब नई नारी घर आवै और प्रथम नारीको पुत्र देखे तो मातासम प्यार करे नहीं तो वह जगमें निपुत्री रह जाय बहुतरि नरकमें जाय पडे बहु प्रकार वहाँ ये दुःख सहे ॥ दोहा ॥ "फिर नारी अरु पुरुष दोउ, पावें सूकर देह ॥ या भंगीकी देह धरि, करे खेहसों नेह ॥ ५ ॥

११९ शिक्षा—हे अर्जुन। ॥ दोहा॥ "ज्वारी जूआं

जीतके, करै खेलसों प्रीत । धनको सुख पावे नहीं, जगमें नहिं परतीत ॥ १ ॥ अन्त नरकमें जायके, पावे कष्ट महान ॥ भाट देह फिर पायके, बोले झूंठ अयान ॥ २ ॥ सातबार घर भाटके, ले वह नर अवतार । बहुरि नरकमें जायके, पावे दुःख अपार ॥ ३ ॥ तासों हे अर्जुन हितू ! जूआंको व्यवहार । भूल चूक कीजै नहीं, यह सुन बारंबार ॥ ४ ॥"

१२० शिक्षा–हे अर्जुन । ॥ चोपाई ॥ "भाट भांड सुन और कलार । इन तीनोंको देतो खार ॥ भांड करै नकले झकजरी । औरनकी अवगुणसों भरी ॥ भाट बुराई औरै गाय । करै भलाई दाता पाय ॥ करै खुटाई पास कलार । जो बैठे औ खोटे चार ॥ लाज १ काज २ गृह ३ बुद्धि ४ विचार ५ । ताते यह उनमें सरदार ॥" ॥ दोहा ॥ "इन तीनोंमें एकको, जो धन दे दातार । पावे अगले

जन्ममें वाहीको अवतार ॥ १ ॥ घर घर फिर उदर भरै, धन नहिं आवै पास । अंतकाल फिर पाय है, घोर नरकमें वास ॥ २ ॥ यह सुनि अर्जुनने कियो, बीतेपै अफसोस । पांय परो घनश्यामके, रह्यो नहीं कुछ होस ॥ ३ ॥" छन्द–"कह्यो श्याम सुन मित्रशोच तज पिछले दिनको । हृदय धरो ये बात जासु कल्याण सबनको ॥ १ ॥"

१२१ शिक्षा–हे अर्जुन ! ॥ दोहा ॥ " दिशा जाय या मूतके, दान करे जो कोय । फल ताको पावै नहीं, नरकहु वासी होय ॥ १ ॥"

१२२ शिक्षा–हे अर्जुन ! ॥ दोहा ॥ 'जो नर कटवावे नहीं, चौथे दिन नख बीस । सप्तम दिन न करावहीं, हजाम तो खुश शीश ॥ १ ॥ उन हाथनसों शुभ करम, खाना पानी खाय ॥ जो कारज वह नर करै, सो निर्फल ह्वै जाय ॥ २ ॥

१२३ शिक्षा–हे अर्जुन !॥दोहा॥"चौदस मावस तिथि मिले, अरु मङ्गल रविवार । जो नर इनमें क्षौर करे, तथा करे, खरवार ॥ १ ॥ या कटवावे नखनको, महापातकी होय ॥ शाप देवता पायके, दुखी दरिद्री जोय ॥ २ ॥ इन चारनके देवता, न्यारे न्यारे जान ॥ तिनकी जो पूजा करे, सो पावे सन्मान ॥ ३ ॥ सुत सम्मतिको परम सुख, पावे या जगमाहिं ॥ अन्तकाल वैकुण्ठमें, बैठे सुखकी छाहिं ॥ ४ ॥

१२४ शिक्षा–हे अर्जुन ! ॥ दोहा ॥" जो नर रोटी आजकी, अगले दिनमें खायँ ॥ सदा रहे बेकार वह, अन्त नरकमें जायँ ॥ १ ॥ रहै दुखी संसारमें, उनके पुत्र निदान ॥ यह सुनि अर्जुनने कह्यो, हे घनश्याम सुजान ॥ २ ॥ जो कुनबी नरके बचे, वस्तु आजकी काल ॥ तो कैसे या

पापसों, पावै मुक्ति दयाल ॥ ३ ॥ कह्यो श्यामने हे हितू, मीठाई पकवान । खावे तो दूषित नहीं, रोटी अवशि न खान ॥ ४ ॥ पै वासी रोटीनको, खानो दुख उपजाय । पात्र अन्न रुकि शाप दे, वह नर सुख ना पाय ॥ ५ ॥ चार व्याधि उत्पन्न हो, जो कोइ बासी खाय ॥ आदि बुद्धिकी हानि हो, दूजे तनु घटि जाय ॥ ६ ॥ तीजे आयू हीन हो, चौथे रोजी घाट । इतने लक्षण पायके, होवें बारह बाट ॥ ७ ॥"

१२८ शिक्षा—हे अर्जुन ! जो मनुष्य इनतीनों बातनको अपने चित्तसौं कभी न्यारी नहीं करै तो इस लोक और परलोकमें परम सुख पावे । प्रथम स्वामीकी सेवामें हँसमुख और निर्लोभ रहै, दूजे चाकरके मनको दुःखी न राखे, तीजे क्रोध न करे ।

दोहा ।

परमगुप्त शिक्षा कही अर्जुन प्रति यदुराय ॥
पढ़त सुनो जो चावसों, भवसागर तरिजाय ॥१॥
श्रीकृष्णदासात्मज, खेमराज हरिभक्त ॥
तिनके यंत्रालय छपी, आदर कीन्हों जक्त ॥२॥

इति ज्ञानमाला समाप्त ।



पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग
खेतवाडी, बम्बई ४००००४

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११०१३

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि.ठाणे- महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक - वाराणसी (उ. प्र.)



मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

